शोध पत्र - संगीत

शास्त्रीय गायन शैली : 'धमार' और उसके पद

* डॉ. नित्यप्रिया श्रीवास्तव

* डी. फिल संगीत प्रवीण, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद

'धमार' ,'धमाल' ,'धम्माली' ,'धमारी' ये चारो शब्द एक ही गायन शैली को इंगित करते जो की 'धमार गायन शैली' के नाम जाना जाता है। धमार की जन्मस्थली ब्रजभूमि को मानना अतिश्योक्ति न होगी । ऐसा माना जाता की पंद्रहवीं शताब्दी के अंत और सोलहवीं शताब्दी के प्रारंभ में उस समय के संगीत परिदृश्य को देखते हुए 'मानसिंह तोमर' और नायक 'बैजू' ने धमार गायकी की नींव डाली। ब्रज के क्षेत्र में लोक– गीत के रुप में बहुत काल से चला आता है। इस शब्द की संस्कृत व्युत्पत्ति के संदर्भ में यदि चर्चा करे तो –(धामृ ऋ अच) 'धाम इव मृच्छति' हो सकता है जिसका अर्थ होगा–'गान का वह प्रकार जो प्रेरित करता हुआ अथवा फडकता हुआ सा चले'अर्थात यह कहा जा सकता है यह गान द्रुत गति में गाये जाने वाला श्रृंगार युक्त गीत है।

ब्रज के मंदिरों में वैष्णव संतो द्वारा रचित विशिष्ट पद धमार ताल में गाये जाते हैं उन पदों को 'धमार ' कहते हैं । धमार के साथ सांगत के लिए अधिकतर पखावज का प्रयोग ही देखने को मिलता है किन्तु साथ में झाझ और ढोल जैसे लोक वाद्य भी सौंदर्य वर्धन के लिए प्रयोग में लाये जाते हैं । कृष्णा एवं गोपिकाओं के होली खेलने का वर्णन 'धमार' की प्रमुख विशेषता है ।'

'समय के साथ–साथ मृदंग और वीणा वादन में भी परिवर्तन होता गया। मृदंग और वीणा प्राचीन काल से ही अधिकांशतया गीतानुगत ही बजाई जाती थीं। मुक्त वादन भी होता था। मृदंग और वीणावादकों ने भी ध्रुवपद और धमार गायकी के अनुरुप अपने को ढाला। धमार के अनुरुप पखावजी से लय– बाँट की लड़ंत शुरु हुई। पखावजी ने भी ध्रुवपद– धमार में प्रयुक्त तालों में भी अभ्यास किया, साथ ही संगत के लिए विभिन्न तालों और लयों की परनों को रचा'।[5]

यह गायन शैली एक प्राचीन शैली है। धमार शैली का स्वरुप काफी कुछ ध्रुवपद की तरह होता है। इस गायन शैली में राधाकृष्ण एवं ब्रज की होली का वर्णन होता है। यह धमार ताल के साथ गाया जाता है। ''इसमें दुगुन, तिगुन, चौगुन आदि लयकारियां अधिकतर गीत के शब्दों को लेकर दिखाई जाती हैं और गमक का खूब प्रयोग होता है। खटके अथवा तान के समान स्वर–समूह वर्ज्य हैं।[1] धमार गायन शैली श्रृंगार रस से ओत प्रोत होता है। ''धमार ताल में गाए जाने वाले होरी गीत प्रबन्ध को ही ''धमार'' कहते है।[2] धमार की भाषा प्रायः ब्रज भाषा होती है इसमें विभिन्न प्रकारी लयकारियां होती है ''श्री राणा के अनुसार धमार दो तरह के होते है–

1. प्रकाश – जिनका सम धमार की पहली पंक्ति को पहली बार गाने से ही स्पष्ट रुप से पहचाना जा सके,

2– गुप्त जिनका सम गुप्त होता है और पहली पंक्ति को तीन बार गान पर अन्तिम बार में समझ में आता था।[3]

''उमामिश्र के शब्दों में''– 'गायक जब उसमें ध्रुवपद शैली के अनुसार आऽ, कुआऽ इत्यादि का दिखाने लगता है तब ,एक ओर तो इसकी सरस शब्द रचना और आकर्षक आलापों से हृदय को संतोष प्राप्त होता है तथा दूसरी ओर लय के चमत्कार से बुद्धि भी चमत्कृत होती है।[4]

'गत एक शताब्दी में धमार के श्रेष्ठ गायक 'नारायण शास्त्री','धर्मदास' के पुत्र 'बहराम खाँ ', 'पं. लक्ष्मणदास', गिद्धौर वाले 'मोहम्मद अली खाँ ', 'आलम खाँ ', आगरे के 'गुलाम अब्बास खाँ 'और उदयपुर के 'डागर बंधु' आदि हुए हैं। ख्याल गायकों के वर्तमान घरानों में से केवल आगरे के 'उस्ताद फैयाज खाँ ' नोम–तोम से अलाप करते थे और धमार गायन करते थे'।[5]

'नायक बैजू' ने धमारों की रचना छोटी की। इसकी गायन शैली का आधार ध्रुवपद जैसा ही रखा गया। वर्ण्य–विषय मात्र फाग से संबंधित और रस श्रृंगार था, वह भी संयोग। वियोग श्रृंगार की धमार बहुत कम प्राप्त हैं। ध्रुवपद की तरह आलाप, फिर बंदिश गाई जाती थी। पद गायन के बाद लय–बाँट प्रधान उपज होती थी। विभिन्न प्रकार की लयकारियों से गायक श्रोताओं को चमत्कृत करता था। पखावजी के साथ लड़ंत होती थी। सम की लुकाछिपी की जाती थी।[6]

'धमार' के कुछ प्रसिद्ध पदों के उदाहरण निम्नवत है–

धमार के पद

राग: काफी,

रचयिता: सूरदास जी

औरन सों खेले धमार श्याम मोंसों मुख हू न बोले।
नंदमहर को लाडिलो मोसो ऐंठ्यो ही डोले।१।
राधा जू पनिया निकसी वाको घूंघट खोले।
'सूरदास' प्रभु सांवरो हियरा बिच डोले।२।

धमार के पद

राग: भैरव ,

रचयिता: कृष्णजीवन जी

आवो पियरवा सुरिजन मितवा, रंगभर मोरे घर आवो ।
एक ले आई गुलाल साजन, सुरिजन होरी खेले, मोह रही ब्रजबाला।१।
बाजत ताल, मृदंग अघोटी, बीना बेन रसाल।
कृष्णजीवन प्रभु होरी खेले, होरी के दिन चार।२।

धमार के पद

राग: गौरी ,

रचयिता: व्यास स्वामिनी

खेलत फाग फिरत रस फूले।
स्यामा स्याम प्रेम बस नाचत गावत सुरंग हिंडोरे झूले।१।
वृंदावन की जीवन दोऊ नटनागर बंसी बट कूले।
व्यास स्वामिनी की छबि निरखत नैन कुरंग फिरत रसमूले।२।

धमार के पद

राग: काफी,

रचयिता: सूरदास जी

नेह लग्यो मेरो श्याम सुंदरसो ।
नेह लग्यो मेरो श्याम सुंदरसो ।
आयो वसंत सभी बन फुले, खेतन फूली है सरसों ।
मैं पीरी पियाके विरहसो, निकसत ताण अधरसो ।
कहो जाय बंसीवरसो ।
फागुन में सब होरी खेलत है, अपने अपने वरसो ।
पिय के वियोग जोगन व्हे निकरी , धूर उड़ावत करसो ।
चली मथुराकी डगरसो ।
ऊधो जाय द्वारका कहियो, इतनी अरज मेरी हरीसों ।
विरहव्यथासे जियरा डरत है , जबते गए हरी घरसो ।
दरस देखनको हों तरसो ।
सूरदास मेरी इतनी अरज है, कृपासिंधु गिरिधरसों ।
गसेरी नदियाँ, नाव पुरानी, अबके आय उबारो सागारसो ।
अरज मेरी राधावरसों ।१

धमार के पद

राग: कान्हरा

रचयिता: जनकृष्ण जी

नवरंगी लाल बिहारी हो तेरे द्वै बाप द्वै महतारी।
नवरंगीले नवल बिहारी हम दैंहि कहा कहि गारी।१।
द्वै बाप सबै जग जाने। सो तो वेद पुरान बखाने।
वसुदेव देवकी जाये। सो तो नंद महर घर आये।२।
हम बरसाने की नारी। तुम्हे दैं हैं हँसि–हँसि गारी।
तेरी भूआ कुंती रानी। सो तो सूरज देख लुभानी।३।
तेरी बहन सुभद्रा क्वारी। सो तो अर्जुन संग सिधारी।
तेरी द्रुपदसुता सी भाभी। सो तो पांच पुरुष मिलि लाभी।४।
हम जाने जू हम जानै। तुम ऊखल हाथ बंधाने।
हम जानी बात पहचानी। तुम कब ते भये दधि दानी।५।
तेरी माया ने सब जग ढूंढ्यो। कोई छोड्यो न बारो बूढ्यो।
'जनकृष्ण' गारी गावे। तब हाथ थार कों लावे।६।

धमार के पद

राग: गौरी ,

रचयिता: कृष्णदास जी

गोकुल गाम सुहावनो सब मिलि खेलें फाग।
मोहन मुरली बजावैं गावें गोरी राग ।१।
नर नारी एकत्र व्है आये नंद दरबार।
साजे झालर किन्नरी आवज डफ कठतार ।२।
चोवा चन्दन अरगजा और कस्तूरी मिलाय।
बाल गोविन्द को छिरकत सोभा बरनी न जाय।३।
बूका बंदन कुमकुमा ग्वालन लिये अनेक।
युवती यूथ पर डारही अपने–अपने टेक।४।
सुर कौतुक जो थकित भये थकि रहे सूरज चंद।
'कृष्णदास' प्रभु विहरत गिरिधर आनन्द कंद।५।

धमार के पद

राग: बसंत ,

रचयिता: कृष्णदास जी

लाल गोपाल गुलाल हमारी आँखिन में जिन डारो जू।
बदन चन्द्रमा नैन चकोरी इन अन्तर जिन पारो जू ।१।
गावो राग बसन्त परस्पर अटपटे खेल निवारो जू।
कुमकुम रंग सों भरी पिचकारी तकि नैनन जिन मारोजू।२।
बंक विलोचन दुखमोचन लोचन भरि दृष्टि निहारो जू।
नागरी नायक सब सुख गायक कृष्णदास को तारो जू।३।

धमार के पद

राग: काफी,

रचयिता: सूरदास जी

व्रज में हरि होरी मचाई

इततें आई सुघर राधिका उततें कुंवर कन्हाई ।
खेलत फाग परसपर हिलमिल शोभा बरनी न जाई ।१।
नंद घर बजत बधाई.....ब्रज में हरि होरी मचाई ।
बाजत ताल मृदंग बांसुरी वीणा ढफ शहनाई ।
उडत अबीर गुलाल कुंकुमा रह्यो सकल ब्रज छाई ।२।
मानो मघवा झर लाई.....ब्रज में हरि होरी मचाई ।
लेले रंग कनक पिचकाई सनमुख सबे चलाई ।
छिरकत रंग अंग सब भीजे झुक झुक चाचर गाई ।३।
परस्पर लोग लुगाई.....ब्रज में हरि होरी मचाई ।
राधा ने सेन दई सखियन को झुंड झुंड घिर आई ।
लपट झपट गई श्यामसुंदर सों बरबस पकर ले आई ।४।

लालजु को नाच नचाई.....ब्रज में हरि होरी मचाई ।
छीन लई हैं मुरली पीतांबर सिरतें चुनर उढाई ।
बेंदी भाल नयन बिच काजर नकबेसर पहराई ।५।
मानो नई नार बनाई.....ब्रज में हरि होरी मचाई ।
मुस्कत है मुख मोड मोड कर कहां गई चतुराई ।
कहां गये तेरे तात नंद जी कहां जसोदा माई ।६।
तुम्ह अब ले ना छुडाई.....ब्रज में हरि होरी मचाई ।
फगुवा दिये बिन जान न पावो कोटिक करो उपाई ।
लेहूं कढ कसर सब दिन की तुम चित चोर सबाई ।७।
बहुत दधि माखन खाई.....ब्रज में हरि होरी मचाई ।
रास विलास करत वृंदावन जहां तहां यदुराई ।
राधा श्याम की जुगल जोरि पर सूरदास बलि जाई ।८।
प्रीत उर रहि न समाई.....ब्रज में हरि होरी मचाई ।

वैसे तो प्राचीन काल से धमार में राधा कृष्ण एवं गोपिकाओं के बीच खेले जाने वाले होली का वर्णन ही होता रहा है, किन्तु मध्यकाल में दरबारों में ऐसे धमारों की भी रचना की गई जहाँ शहंशाहों को ही नायक का रूप दे दिया गया ऐसा जहाँगीर ने लिखा है कि– तानसेन अपनी रचनाओं में 'अकबर' का नाम दाल दिया करते थे , ऐसा एक धमार की बंदिश से भी स्पष्ट हो जाता है जो राग यमन में निबद्ध है जिसमे मानिनी नायिका और दूती का वर्णन है –

होरी खेलेई बनेगी ,रुसै अब न बनेगी ।
मेरो कहो तू मान नवेली , जब व रंग में सनैगी ।
कई बेरि आई गई तू नहिं मानत , ऊँची करी ठोढ़ी भौहें तनैगी ।
साही जलालदीन दीजै ,आपुतैं आप मनैगी ।

इसमें दूती कहती है– अब तो होली खेले ही बनेगी। रूठने से कुछ नहीं होगा । नवेली , तू मेरा कहना मान ले , तभी उस रंग में ओत–प्रोत होगी । मई कई बार आई गई ,परन्तु तू ठोढ़ी ऊँची कर भौंहे तानते हुए रहेगी । शाह जलालुद्दीन (अकबर) आप फगुआ (फाग में दिया जाने वाला उपहार) दीजिये । अपने आप मान जाएगी ।(व्यंजना सूक्ष्म है यह सामान्य उपहार नहीं है)।"

इसी प्रकार मुहम्मद शाह रंगीले के दरबारी कलाकार 'सदारंग' ने भी कई धमारों की रचना की जिनमे मुहम्मदशाह को नायक के रूप में प्रस्तुत किया ऐसा ही एक धमार इस प्रकार है –

अब तौ महमदसाहि पिय घर आये ।
चहल पहल फागुन की देखौ, जित तित 'सदारंग ' बरसाए ।।
चौन सुन गावो बजावो रहसि रहसि करि लाखनि पाए ।
एक होरी दूजे न्हाये रंग सों ,यह सुख गिने न जाह गिनाये ।।[10]

यद्यपि मध्य काल में रचनाकारों ने धमार में अपने शहंशाह का वर्णन नायक के रूप में किया है किन्तु ऐसा कहना सर्वथा गलत होगा की उन्होंने ब्रजवासी कृष्ण एवं गोपिकाओं को धमार गीतों से पूर्णतया अलग कर दिया हो , क्योंकि निम्नलिखित यह धमार इस बात का सूचक है की उस समय भी कृष्ण–गोपिकाओं की होली का वर्णन का प्रचलन समाप्त नहीं हुआ था जिसकी पुष्टि 'सदारंग' के ही इस धमार से स्पष्ट हो जाती है–

नए हो खिलार , नए हो रसिया अनोखे , नयी भई ठकुराई
भलो बुरो पहिचानत नाही एकहि बेर चले इतराई
नाउन न जानौ,गाऊं न बूझों, ऐसी ब्रज में धूम मचाई ।
रसिक छैल रसभीने गिरधर ,सदारंग सुखदाई ।।[10]

fu"d"kZ

उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट है की 'धमार' गायन शैली मुख्यतः श्रृंगार रस से ओत–प्रोत है, जिसमे कृष्ण–राधा एवं गोपियों का बहुत सुन्दर एवं श्रृंगार युक्त वर्णन मिलता है जोकि सभी श्रोतागणों को आनंद एवं हर्षोल्लास से भर देता है । इस गायन शैली का मुख्य उद्देश उत्साह एवं श्रृंगार ही है, जोकि ब्रज की होली की विशेषता है । परन्तु आज इस शैली को पारंपरिक रूप से गाने वाले एवं सुनने व् समझने वालों की संख्या बहुत ही कम रह गई है । आवश्यकता है की इस शैली को संरक्षित एवं संवर्धित करने की जिससे भारत की इस प्राचीन सांस्कृतिक गायन शैली को लुप्तप्राय होने से बचाया जा सके ।

संदर्भ ग्रंथ

1. राग परिचय (भाग दो) प्रो0 हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव पेज नं0–178–179
2. हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति क्रमिक पुस्तक मालिका (दूसरी पुस्तक)पं0 विष्णु नारायण भातखण्डे पेज नं0–15
3. भारतीय संगीत में निबद्ध–सुभद्रा चौधरी
4. काव्य और संगीत का पारस्परिक सम्बन्ध – डॉ0 उमा मिश्र पृ0 89
5. http://hi.wikipedia.org/wiki/
6. http://www.ignca.nic.in/coilnet/brij614.htm
7. http://hi.wordpress.com/
8. http://mithivirdi.blogspot.in/2013/03/blog-post_2.html
9. http://pushti-priya.blogspot.in
10. उत्तर भारतीय संगीत के सप्तऋषि आचार्य ब्रहस्पति एक अध्ययन–सौभाग्य वर्धन बृहस्पति ,पृष्ठ १५४